राज्य अध्याय 28

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए ***प्रार्थना करें।***
अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शान्त समय)*** **भजन संहिता 141,143,145 और 146**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 141,143,145 और 146) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर की महानता)*** **(4) इब्रानियों 4:13**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***
(4) परमेश्वर सर्वज्ञानी है। इब्रानियों 4:13 – सृष्टि की कोई वस्तु परमेश्वर से छिपी नहीं है वरन् जिससे हमें लेखा देना है, उसकी आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रगट हैं।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों की पत्री)*** **रोमियों 7:14-25**

परिचय। **रोमियों 7:14-25** का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 7:14-25 में, पौलुस यह सिखाता है कि एक मसीही के भीतर आत्मिक और नैतिक युद्ध चलता रहता है। एक मसीही के दो स्वभाव होते हैं : पाप का स्वभाव और नये मनुष्यत्व का स्वभाव। पाप का स्वभाव उसका वास्तविक स्वभाव नहीं है, लेकिन फिर भी यह एक ऐसी शक्ति है जो अक्सर उसे अपना बन्दी या क़ैदी बनाती है। एक विश्वासी बार-बार पाप करता रहता है, लेकिन वह इन पापों से स्वतन्त्र होने की इच्छा भी रखता है।

नैतिक व्यवस्था पाप की शक्ति और दुष्टता से स्वतन्त्र नहीं कर सकती! पौलुस अपने स्वयं के अनुभव से, पवित्रता (शुद्धिकरण) के लिए व्यवस्था की अपर्याप्तता को दर्शाता है! पाप और पवित्रता के बीच आपसी युद्ध में, कोई भी व्यवस्था एक मसीही की सहायता नहीं कर सकती। अपने पाप के स्वभाव और अपने नये मनुष्यत्व के स्वभाव के बीच संघर्ष में जीत की एकमात्र आशा प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह में है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 7:14-25 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएँ कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें : हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

7:14-20

खोज 1. **व्यवस्था क्या नहीं कर सकती।**

हालाँकि व्यवस्था पवित्र, धर्मी और अच्छी है, लेकिन यह मसीहियों को पवित्र, धर्मी या अच्छा नहीं बना सकती।

(1) **एक मसीही के मानव स्वभाव में दो वास्तविकताएँ होती हैं।**

पहले पहलू को "शरीर" (पाप की व्यवस्था जो उसके शरीर के अंगों में संचालित होती है) कहा जाता है (रोमियों 7:18), अर्थात्, उसका पाप का स्वभाव, जो अधूरा, निर्बल और अस्थायी (क्षणभंगुर) है। दूसरे पहलू को "बुद्धि" (बुद्धि की व्यवस्था, भीतरी मनुष्यत्व) (रोमियों 7:22,25), कहा जाता है, जो कि उसका नये मनुष्यत्व का स्वभाव है, जिसे परमेश्वर के आत्मा (पवित्र आत्मा) द्वारा नियन्त्रित किया जाता है और वो भी उसकी नैतिक व्यवस्था के बिना।

रोमियों 7:14-25 एक मसीही के पाप के स्वभाव के बीच युद्ध (संघर्ष या लड़ाई), जो उसे आदम से प्राप्त हुआ था, और उसका नये मनुष्यत्व का स्वभाव, जिसे वह मसीह द्वारा प्राप्त करता है (तुलना करें रोमियों 5:17-19), के विषय में बताता है,। पाप का स्वभाव और नये मनुष्यत्व का स्वभाव आत्मा (हृदय) के साथ-साथ मसीही के शरीर में वास करता है।

(2) **एक मसीही जिस अच्छे काम की इच्छा करता है, वह तो नहीं करता,**
परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता है।

रोमियों 7:14-15 में, पौलुस यह तर्क देता है कि नैतिक व्यवस्था मसीहियों को पवित्र करने में असमर्थ है। यह नैतिक व्यवस्था के स्वभाव के कारण नहीं, बल्कि पाप के स्वभाव के कारण है, जो अभी भी मसीहियों में वास करता है। इसलिए व्यवस्था का स्वभाव आत्मिक है, क्योंकि यह परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा को प्रगट करता है, जो कि पवित्र, धर्मी और अच्छी है (7:12)। परन्तु मसीहियों का पाप का स्वभाव आत्मिक नहीं है, अर्थात् यह परमेश्वर और उसकी पवित्र, धर्मी और भली इच्छा के अधीन नहीं है और न ही हो सकती है।

गैर-मसीही *स्वेच्छा* और *सदैव* अपने पाप के स्वभाव (present tense, active) (6:16) के दास होने की इच्छा रखते हैं, जबकि एक मसीही ने *अनजाने में* (उदाहरण के तौर पर : आदम के पाप में गिरने के द्वारा) स्वयं को पाप के स्वभाव (perfect tense, passive) को बेच दिया हैं (रोमियों 7:14)। मसीही स्वयं को स्वेच्छा से पाप की सेवा के लिए नहीं देते, परन्तु उनके पाप के स्वभाव के कारण वे किसी बिके हुए व्यक्ति की अवस्था या स्थिति में

होते हैं, जिनके किये गए कामों में उनके भीतरी इच्छा का झुकाव का प्रमाण नहीं होता है (रोमियों 7:14; तुलना करें "अपने पापी स्वभाव के क़ैदी" रोमियों 7:23)। मसीही अच्छे काम करना चाहते हैं, लेकिन उनका पापी स्वभाव उनके भीतर इतनी सामर्थ्य से काम करता है कि वे अक्सर बुराई ही किया करते हैं (रोमियों 7:15)।

पौलुस का आत्मिक और नैतिक लक्ष्य सिद्धता से कम नहीं है (तुलना करें फिलिप्पियों 3:12-14 और मत्ती 5:48 से; इब्रानियों 12:14)। लेकिन प्रत्येक दिन के अन्त में जब पौलुस अपने जीवन का मूल्यांकन करता है, तो वह स्वयं को परमेश्वर की सिद्धता के मानक से बहुत कम पाता है और अपने द्वारा किए गए बुरे कामों से घृणा करता है। उसे यह एहसास होता है कि उसका लक्ष्य वास्तव में प्राप्त करने की तुलना में बहुत अधिक है।

(3) **केवल नैतिक व्यवस्था एक मसीही को पवित्र, धर्मी या अच्छा नहीं बना सकती!**

रोमियों 7:16-20, पौलुस कई महत्वपूर्ण बातों का निष्कर्ष निकालता है। वह यह निष्कर्ष निकालता है कि यद्यपि मसीही अपने अपराधों के कारण परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था से घृणा तो करते हैं, लेकिन फिर भी वे यह स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था अच्छी है (रोमियों 7:16)। वह यह निष्कर्ष निकालता है कि पाप के काम, जो मसीही करते हैं, अब मसीहियों के वास्तविक चरित्र की कसौटी नहीं है (रोमियों 7:17)। उनके पापी कार्य वास्तव में उनके स्वयं के कार्य हैं। लेकिन जब इन पाप के कार्यों को मसीहियों के नये मनुष्यत्व के स्वभाव के अनुसार नहीं किया जाता, तब वे उनके सम्पूर्ण मानव स्वभाव या वास्तविक स्थिति को नहीं दर्शाते। वह यह निष्कर्ष निकालता है कि पाप के कार्य, जो मसीही अक्सर करते हैं, केवल इस बात की पुष्टि करते हैं कि आत्मिक या नैतिक रूप से कुछ भी अच्छा या लाभकारी जीवन उनके पाप के स्वभाव में नहीं है (रोमियों 7:18-20)।

यद्यपि नैतिक व्यवस्था यह आज्ञा देती है कि एक मसीही को क्या करना चाहिए और मसीहियों का नया मनुष्यत्व कैसी नैतिक व्यवस्था की इच्छा रखता है, <u>नैतिक व्यवस्था मसीहियों के पाप के स्वभाव का नाश नहीं कर सकती</u>! जब भी परमेश्वर किसी विशेष बुरे काम को न करने की आज्ञा देते हैं, तो परमेश्वर की नैतिक आज्ञा इस बुराई को करने के लिए मसीहियों में इसके झुकाव को अपने आप से नाश नहीं करती।

निष्कर्ष। नैतिक व्यवस्था मसीहियों को उनके पापी स्वभाव और उनके नये मनुष्यत्व के बीच संघर्ष में मदद नहीं कर सकती। केवल नैतिक व्यवस्था एक मसीही को पवित्र, धर्मी या अच्छा नहीं बना सकती।

7:21-25

<u>खोज 2</u>. **<u>व्यवस्था क्या नहीं कर सकती। यद्यपि एक मसीही परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था से प्रसन्न रहता है, केवल परमेश्वर का अनुग्रह उसे उसके पाप के स्वभाव के पूर्ण प्रभुत्व से बचा सकती है</u>।**

(1) **मसीहियों में पवित्र आत्मा का नियंत्रण कभी भी पूर्ण या सिद्ध नहीं होता है।**

रोमियों 7:21-25 में, पौलुस अपना अन्तिम निष्कर्ष बताता है। मसीहियों का जीवनभर का संघर्ष उनके पाप के स्वभाव, जो उन्हें आदम से प्राप्त हुआ था, और उनके नये मनुष्यत्व का स्वभाव, जो उन्हें मसीह से प्राप्त हुआ है, के बीच है। अपने नये मनुष्यत्व के स्वभाव (भीतरी मनुष्यत्व, बुद्धि, बुद्धि की व्यवस्था) में, मसीही *सदैव* परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था से प्रसन्न (Present tense) रहते हैं (रोमियों 7:22)।

परन्तु एक मसीही को जल्द ही बड़े कष्ट के साथ इस बात का एहसास होता है कि उसका पाप का स्वभाव या दुष्ट स्वभाव *सदैव* (Present tense) उसके नये मनुष्यत्व के स्वभाव के विरूद्ध युद्ध करता रहता है और उसे इस बात का एहसास कराता रहता है कि वह अपने पाप के स्वभाव का दास है। पाप का स्वभाव न केवल

मसीही जन के विरूद्ध युद्ध करता है, बल्कि अक्सर उस पर विजय भी प्राप्त कर लेता है (रोमियों 7:23:)! यह पाप का स्वभाव मसीहियों की आत्मा (हृदय) और शरीर को दास बना लेता है और उन्हें अपने शक्तिशाली भ्रष्ट प्रभाव के अधीन कर देता है। पाप के स्वभाव की शक्ति अभी भी इतनी प्रभावी है, कि मसीही जन अपनी इच्छा शक्ति या प्रयास से इसका विरोध नहीं कर सकते हैं, (तुलना करें रोमियों 15,23 से)। मसीही अपने पाप के स्वभाव के इच्छुक सेवक नहीं बनते हैं, बल्कि इसके अभागे शिकार होते हैं। जब तक एक मसीही अपनी वर्तमान शारीरिक देह में रहता है, वह अपने पाप के स्वभाव का *अनिच्छुक और असन्तुष्ट* सेवक बना रहता है। जब तक मसीही इस पृथ्वी पर रहता है, तब तक उसका पाप का स्वभाव उसमें बना रहेगा तथा पवित्र आत्मा का नियंत्रण कभी भी उसमें पूर्ण या सिद्ध नहीं होगा।

मसीहियों की वर्तमान शारीरिक देह को "मृत्यु की देह" कहा जाता है (रोमियों 7:24), क्योंकि उनकी शारीरिक देह अभी भी उस स्थिति में है जहाँ उनका पाप का स्वभाव बहुत ही विशेष रूप से संचालित होता है, जिससे आत्मिक मृत्यु और अन्त में शारीरिक मृत्यु होती है।

(2) मसीह एक मसीही को उसके पाप के स्वभाव के प्रभावी संचालन से बार–बार छुड़ाएगा।

नैतिक व्यवस्था स्वयं मसीही को उसकी असहाय और अभावग्रस्त स्थिति के बारे में अधिक जागरूक बनाती है। यह व्यवस्था उसे अपने पाप के स्वभाव के विरूद्ध इस संघर्ष में जीत हासिल करने के लिए प्रेरित करती है जहाँ इस जीत को केवल उसी से प्राप्त किया जा सकता है, अर्थात्, मसीह के द्वारा (रोमियों 7:25)। केवल यीशु मसीह *निश्चित रूप से* एक मसीही को उसकी "मृत्यु की देह" से बचा (future tense, expresses certainty) सकता हैं और बचाएगा भी (रोमियों 7:24)।

हमेशा के लिए मसीही जन के पुराने मनुष्यत्व के स्वभाव (पुरानी देह) को मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया गया है (रोमियों 6:6)। *हमेशा के लिए* मसीही जन पाप की दासता से स्वतन्त्र (aorist tense) हो गया है और अब वह धार्मिकता का दास (रोमियों 6:18) और परमेश्वर का दास बन गया है (रोमियों 6:22)। लेकिन *बार–बार,* मसीह मसीही को उसके पापी स्वभाव से जो सशक्त रूप से उसमें संचालित होता है, बचाएगा (1 कुरिन्थियों 10:13; 1यूहन्ना 1:9)। और अपने दूसरे आगमन पर, मसीह *निश्चित रूप से, पूरी तरह से और हमेशा के लिए* मसीही को उसके पाप के स्वभाव से बचाएगा (रोमियों 7:24)।

(3) मसीही को उसके पाप के स्वभाव के विरूद्ध युद्ध करना चाहिए और अपने पाप के स्वभाव के कुकर्मों का अन्त करना चाहिए।

निष्कर्ष। एक मसीही का आत्मिक संघर्ष उसके पाप के स्वभाव, जो उसे आदम से प्राप्त हुआ था, और उसके नये मनुष्यत्व के स्वभाव, जो उसे मसीह से प्राप्त हुआ है, के बीच है। एक मसीही का पाप का स्वभाव एक ऐसी शक्ति है जिससे वह स्वयं को स्वतन्त्र नहीं कर सकता। *समय के साथ–साथ* वह एक दास के रूप में अपने पाप के स्वभाव की दासता में रहता है। हालाँकि, मसीही का नये मनुष्यत्व का स्वभाव भी एक शक्ति है, क्योंकि पवित्र आत्मा उसमें वास करता है! इसलिए, *बार–बार,* वह एक दास के रूप में परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था की भी सेवा करता है।

पौलुस *इस वर्तमान परिस्थिति* को स्वीकार नहीं करता। वह इस बात की गहराई से आश्वस्त है कि यीशु मसीह उसे इस परिस्थिति से बचायेगा। इसलिए, उसके पास अपने पाप के स्वभाव के विरूद्ध युद्ध करने और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा अपने दुष्कर्मों को मारने का उत्तरदायित्व है (तुलना करें रोमियों 8:13 से; गलातियों 5:16–26)।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 7:14–25 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में

प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात् अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

7:14-26

प्रश्न 1. **इस गद्यांश में पौलुस के व्यक्तिगत अनुभव के किस चरण को चित्रित किया गया है? क्या यह अनुभव एक पुराने मनुष्यत्व के स्वभाव का है या नये मनुष्यत्व के स्वभाव का?**

ध्यान दें। ऐसे लोग हैं जो तर्क देते हैं कि रोमियों 7:14-26 एक नये जन्मे विश्वासी का अनुभव नहीं हो सकता। वे इस कथन पर, "मैं शारीरिक हूँ" (रोमियों 7:14) और एक ओर रोमियों के अध्याय 7 और दूसरी ओर रोमियों के अध्याय 6 और 8 के बीच अपना तर्क देते हैं।

फिर भी, रोमियों 7:14-26 में पौलुस अपने अनुभव को नये जन्मे विश्वासी के अनुभव के रूप में वर्णित करता है।

(1)**पौलुस स्वयं के विषय में नम्र और यथार्थवादी है।**

एक नये जन्मे विश्वासी के रूप में पौलुस स्वयं के विषय में कहता है : "प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ" (1 कुरिन्थियों 15:9), "सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूँ" (इफिसियों 3:8), और "पापियों में सबसे बड़ा हूँ" (1तीमुथियुस 1:15)। इसी प्रकार, वह स्वयं को "अभागे मनुष्य" के रूप में वर्णित करता है (रोमियों 7:24), जबकि वह अभी तक पूरी तरह से अपने पाप के (अपवित्र) स्वभाव से बचाया (छुड़ाया) नहीं गया है। यह केवल दूसरे आगमन पर होगा जब वह यीशु मसीह को आमने-सामने देखेगा (तुलना करें 1यूहन्ना 3:1-3 से; फिलिप्पियों 3:8-14)!

(2)**रोमियों 7:14-26 में एक अविश्वासी की तुलना में विश्वासी के वर्णन की अधिक संभावना मिलती है।**

रोमियों 7:14-25 में पौलुस का कथन एक अधर्मी मनुष्य की तुलना में एक नये जन्मे मनुष्य के कथन की अधिक संभावना को बताता है। इसकी संभावना नहीं है कि एक अधर्मी व्यक्ति यह कहेगा, "मैं मान लेता हूँ कि व्यवस्था भली है" (रोमियों 7:16,22), "जो मैं करता हूँ उसको नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूँ वह नहीं किया करता, परन्तु जिससे मुझे घृणा आती है, वही किया करता हूँ" (रोमियों 7:15,19,24) और "भलाई करने की इच्छा करता हूँ" (रोमियों 7:18,19,21)। इस बात की संभावना नहीं है कि एक अधर्मी व्यक्ति यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को धन्यवाद देगा, जैसे पौलुस दे रहा है (रोमियों 7:25; तुलना करें 1 कुरिन्थियों 12:3 से)।

यह स्पष्ट है कि रोमियों 7:14-25 में, पौलुस बताता है कि मसीहियों की निर्बलता कितनी बड़ी है। पवित्र होने के लिए, मसीहियों को अपने भीतर के पाप के स्वभाव की तुलना में बहुत अधिक बाहरी सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। उन्हें यीशु मसीह और उसके पवित्र आत्मा को छोड़ किसी और की आवश्यकता नहीं है! पृथ्वी पर अपने पहले आगमन के समय, यीशु मसीह ने सभी विश्वासियों के लिए आवश्यक धार्मिकता और पवित्रता को अर्जित किया। उद्धार के सम्पूर्ण इतिहास में, पवित्र आत्मा मसीहियों के व्यक्तिगत जीवन में इस धार्मिकता और पवित्रता को लागू करता है। केवल दूसरे आगमन पर सभी मसीही पूरी तरह से मसीह के समान होंगे (1 यूहन्ना 3:1-3; फिलिप्पियों 3:20)।

(3)**रोमियों 7:14-26 और रोमियों 7:5,9अ के बीच में बड़ा अन्तर है।**

रोमियों 7:5,9अ एक अधर्मी व्यक्ति का वर्णन करता हैं। जब पौलुस का मनुष्यत्व नया नहीं था, तब वह शारीरिक (पाप के स्वभाव में) था तथा *मृत्यु का फल उत्पन्न करता था* (रोमियों 7:5; तुलना करें गलातियों 5:19-21 से)। जब तक वह नैतिक व्यवस्था से अलग रहा, तब तक उसने परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था पर कोई गंभीर ध्यान नहीं दिया। नैतिक व्यवस्था से उसके पाप के स्वभाव में पापपूर्ण इच्छाओं का उदय नहीं हुआ और वह पापों के लिए परमेश्वर के दण्ड से बेख़बर, *आत्मनिर्भर और स्वधर्मी जीवन जीता रहा* (रोमियों 7:9अ)!

रोमियों 7:7-13 एक नये जन्मे मनुष्य का वर्णन करता है। यह गद्यांश पौलुस के *मन फिराने से ठीक पहले के समय,* और शीघ्र ही बाद के समय के अनुभव का वर्णन करता है। रोमियों 7:8-13 में *भूतकाल* से रोमियों 7:14-25 में *वर्तमान काल* का परिवर्तन एक अधर्मी मनुष्य से एक नये जन्मे मनुष्य के मूल परिवर्तन का उल्लेख करता है! रोमियों 7:14-26 में पौलुस, जब तक वह इस धरती पर अपने वर्तमान नाशवान शरीर में रहता है, तब तक वह एक मसीही की निर्बलता और उसके संघर्ष का वर्णन करता रहता है!

(4)**रोमियों 7:14-26 और रोमियों 6:18,22 में मतभेद नहीं हैं।** <u>एक नया जन्म पाने वाला विश्वासी एक ही समय में पापी और पवित्र भी है : एक विश्वासी जो अक्सर परमेश्वर के लक्ष्य को पाने में असफल रहता है, लेकिन फिर भी वह परमेश्वर की दृष्टि में एक पवित्र जन है</u>।

एक ओर, विश्वासी *अभी भी प्रायः* "पाप के हाथ बिका हुआ" है (present tense) **(रोमियों 7:14)।** उसके पाप के स्वभाव का अभी भी उसके जीवन में ऐसा प्रभाव है कि वो अभी तक पूरी तरह से पाप रहित जीवन नहीं जी सकता (तुलना करें मत्ती 6:12 से; 1 यूहन्ना 1:8-10; 2:1-2)। पाप का (अपवित्र) स्वभाव अभी भी एक शक्ति है जो मसीही को विवश और नियन्त्रित करता है (रोमियों 7:21,23,25)। पाप का स्वभाव *समय के साथ-साथ निरन्तर* (present continuous tense) पवित्र आत्मा के विरूद्ध युद्ध (Greek: antistrateuomai) करता रहता है या मसीही में रहने वाले पवित्र आत्मा का विरोध करता है तथा मसीही को अपनी पुरानी जीवन-शैली में वापस खींचने की कोशिश करता है (रोमियों 7:23अ; तुलना करें गलातियों 5:17 से)। *अक्सर (निरन्तर)* (present continuous tense) पाप का स्वभाव (पाप की व्यवस्था) मसीही को पाप की व्यवस्था के युद्ध का क़ैदी या बन्दी (Greek: aichmalótizó) बनाता है (रोमियों 7:23ब)।

पाप का स्वभाव (पाप की व्यवस्था) इतना शक्तिशाली है कि मसीही अपनी इच्छा शक्ति या प्रयास से इसका विरोध *नहीं* कर सकता। पौलुस यह *नहीं* कहता कि पाप का स्वभाव *हमेशा* विजयी होता है या कोई मसीही केवल पराजित जीवन ही जी सकता है। उसका कहना है कि एक मसीही के पाप या दुष्टता का स्वभाव एक ऐसी शक्ति है जिससे वह स्वयं को स्वतंत्र नहीं कर सकता और जो *कभी-कभी या प्रायः (और इस प्रकार हमेशा के लिए नहीं)* इस तथ्य के बावजूद कि मसीही जन ऐसा नहीं चाहता, पाप का यह स्वभाव उस पर विजयी होता रहता है।

दूसरी ओर, मसीही जन *"हमेशा के लिए पाप के लिए मर गया"* (aorist tense) **(रोमियों 6:2)।** मसीही जन हमेशा (aorist time) के लिए पाप के लिए मर गया (Greek: apothnéskó)। वह *हमेशा* (perfect tense) के लिए व्यवस्था के अनुसार पाप से मुक्त (न्यायी) (Greek: dikaiomai) हो गया (रोमियों 6:7)। वह *हमेशा* (aorist time) के लिए पापों से छुड़ाए (Greek: eleutheroó) जाकर, परमेश्वर और उसकी धार्मिकता का दास (Greek: douloó) हो गया (रोमियों 6:18,22)।

वह स्वयं (Greek: logizomai) को *निरंतर* (present tense) यह आज्ञा देता रहता है कि वह पाप के लिए मर गया है, लेकिन अब जो वह जीवित है तो परमेश्वर (मसीह यीशु) में जीवित है (रोमियों 6:11)। अब वह पाप को उसके नाशमान शरीर में राजा (Greek: basileuó) के समान राज्य करने की अनुमति *नहीं* दे सकता, कि उसकी बुरी लालसाओं के अधीन रहे (रोमियों 6:12)। वह यह आज्ञा देता है कि *कभी भी* अपने अंगों को

अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को *न* सौंपें (Greek: parhistémi/parhistanó) (imperative mood, present continuous tense), बल्कि अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा जानकर, और अपने अंगों (उदाहरण के लिए, अपने कान और आँखें, हाथ और पैर, मन और हृदय) को धार्मिकता के हथियार (यंत्र) होने के लिए परमेश्वर को सौंपें (रोमियों 6:13)। जैसे उसने *हमेशा (पहले)* के लिए यह आज्ञा दी, कि जैसे अपने सभी अंगों को अशुद्धता और निरंतर बढ़ती हुई दुष्टता के दास (शाब्दिक अर्थ में : एक दास के रूप में) (Greek: parhistémi/parhistanó) (imperative mood, aorist tense) होने के लिए सौंपा था, इसलिए वैसे ही *अब हमेशा* के लिए अपने सभी अंगों को पवित्रता के लिए धार्मिकता की अुगवाई पाने के लिए *सौंप* (imperative mood, aorist tense) (शाब्दिक अर्थ में : एक दास के रूप में) देना चाहिए (रोमियों 6:19)।

उसके पाप के स्वभाव के वर्चस्व की स्थिति और शक्ति *हमेशा* के लिए टूट गई! यद्यपि वह समय के साथ बार-बार पाप करता है (रोमियों 7:14-26) परन्तु वह न तो पाप करना चाहता है, न ही पाप में रहना चाहता और न ही वह पाप में बना रहेगा (पाप में कायम नहीं रहेगा) (रोमियों अध्याय 6)! शैतान, अधर्मी और दुष्ट संसार के पाप का स्वभाव एक मसीही को धर्म के काम करने और पवित्रता में बढ़ने से नहीं रोक सकता (रोमियों 6:13,17,19)! पाप में निरंतर जीवन जीने का अर्थ है कि मनुष्य अभी भी "आत्मिक रूप से मरा हुआ है", "अभी उसका नया जन्म नहीं हुआ है" (तुलना करें 1 यूहन्ना 3:6-9 से)। परन्तु हमेशा के लिए धार्मिकता के द्वारा निरन्तर पवित्रता (पवित्र जीवन) में बने रहने का परिणाम (शाब्दिक) अन्त में अनन्त जीवन है (रोमियों 6:23)!

मसीह में अपनी स्थिति या परिस्थिति के संदर्भ में, एक मसीही पहले ही एक पवित्र जन है। मसीह की 100% सिद्ध धार्मिकता और पवित्रता (जो मसीह ने मसीहियों के लिए अर्जित या प्राप्त की है) को पहले ही उसे (NIV: उसके लेखे में जोड़ा गया) दे (मसीह के कारण) दिया गया है (1 कुरिन्थियों 1:30)। वह अधर्मी और दुष्ट संसार से पहले से ही *अलग* हो चुका है और अब केवल परमेश्वर को समर्पित है।

यीशु मसीह में अपनी वृद्धि की प्रक्रिया के संदर्भ में, एक मसीही अभी तक अपने विचारों, उद्देश्यों, दृष्टिकोण, शब्दों और कर्मों में (अपनी मसीही चाल, विकास या जीवनशैली में) सिद्ध या पूर्ण रूप से धर्मी और पवित्र नहीं है (तुलना करें 1 पतरस 1:15-16)।

(5)**रोमियों 7:14-26 और रोमियों 8:7-8 एक दूसरे के विपरित हैं।**

शारीरिक व्यक्ति। रोमियों 8:7-8 पदों का शाब्दिक अर्थ है, "क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि *न* तो परमेश्वर की व्यवस्था (present continuous tense) के अधीन है, और *न* हो सकता है। और जो शारीरिक दशा *में है* (present continuous tense), वे परमेश्वर को प्रसन्न *नहीं* कर सकते" (present continuous tense)।

शारीरिक मनुष्य "शरीर में" रहता है, अर्थात्, उसका दुष्ट स्वभाव उस पर प्रभुता करता है। परिणामस्वरूप, वह परमेश्वर से बैर रखता है और वह कभी भी परमेश्वर की व्यवस्था (present continuous tense) के अधीन *नहीं* होता है और *न* ही हो सकता है (present continuous tense) (रोमियों 8:7)।

नये मनुष्यत्व का व्यक्ति। रोमियों 8:5-6 का शाब्दिक अर्थ है, "जो व्यक्ति *निरंतर* आत्मा के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करते हैं (present continuous tense), वे आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं (present continuous tense), अर्थात् जीवन और शान्ति"। शारीरिक व्यक्ति के विपरीत, नये मनुष्यत्व का मसीही *निरन्तर* परमेश्वर की व्यवस्था (परमेश्वर की इच्छा) से प्रसन्न रहता है (present continuous tense) (रोमियों 7:22) और पूर्ण मन (अर्थात्, उसका नये मनुष्यत्व का स्वभाव) से उसकी सेवा (शाब्दिक अर्थ : दास के रूप में) करता रहता है (present continuous tense), हालाँकि, समय के साथ वह उसके विपरीत करता है (present continuous

tense), अर्थात् अपनी नाशवान देह के साथ पाप की व्यवस्था (अर्थात्, उसका पाप का स्वभाव) की सेवा करता है (रोमियों 7:6)।

जबकि शारीरिक व्यक्ति परमेश्वर से घृणा करता है (रोमियों 8:7), लेकिन नये मनुष्यत्व का मसीही *निरन्तर* उस बुराई से घृणा करता है (present continuous tense) जो वह अक्सर करता है (रोमियों 7:15)!

7:14

***प्रश्न 2*. "शारीरिक" और "पाप के स्वभाव" में होने में क्या अन्तर है?**

ध्यान दें।

(1)**सभी गैर-मसीही "शारीरिक" होतें हैं।**

गैर-मसीही का केवल एक स्वभाव होता है : पाप या दुष्टता का स्वभाव (Greek: sarx), जो उस पर हावी और उसे नियन्त्रित करता है। उसके पास उसके भीतर रहने वाला पवित्र आत्मा नहीं है (रोमियों 8:7-10)। हालाँकि वह स्वेच्छा से अपने पाप के स्वभाव का दास बना रहना चाहता है (रोमियों 6:16), लेकिन वह स्वेच्छा से अपने पाप के स्वभाव से स्वतन्त्र नहीं हो सकता। वह अपने शरीर के अंगों को अधर्म और अपवित्रता की सेवा करने के लिए दे देता है। वह स्वयं को बाइबल[1] के परमेश्वर, जिसने स्वयं को यीशु मसीह में प्रगट किया है और उसकी इच्छा के (जैसा कि बाइबल में बताया गया है) अधीन नहीं करता है। यहाँ तक कि वह स्वयं को बाइबल के परमेश्वर के सम्मुख समर्पित नहीं करता। वह कभी भी बाइबल के परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता। इस प्रकार, केवल "शारीरिक" होना "पाप के स्वभाव" में होना है!

(2)**सभी मसीही अपने मानव स्वभाव के केवल एक पहलू के रूप में "शारीरिक" हैं।**

<u>जैसा कि एक मसीही के पास, दो स्वभाव होते हैं</u> : उसके पाप का स्वभाव और नये मनुष्यत्व का स्वभाव। **परमेश्वर की व्यवस्था आत्मिक है** (Greek: pneumatikos) **(रोमियों 7:14)।** अर्थात्, यह परमेश्वर की इच्छा और स्वभाव को प्रगट करती है, जो कि पवित्र, धर्मी और भली है।

एक मसीही के पाप के स्वभाव को "शारीरिक, सांसारिक" (Greek: sarkinos) **कहा जाता है (रोमियों 7:14)।** इस प्रकार, मसीही का पाप का स्वभाव परमेश्वर की व्यवस्था के विपरीत है। परमेश्वर की व्यवस्था "आत्मिक" है, लेकिन एक मसीही का पाप का स्वभाव "शारीरिक" है, अर्थात् यह अपवित्र, अधर्मी और दुष्ट है। <u>एक मसीही का पाप का स्वभाव अक्सर उससे उन कार्यों को करवाने का कारण बनता है, जिनसे वो घृणा करता है, और उन कार्यों को करने से रोकता है, जिनसे वह प्रेम करता है</u>। एक मसीही जानता है कि उसके पाप के स्वभाव में कुछ भी अच्छा या लाभकारी नहीं है (रोमियों 7:18)। इस प्रकार, "शारीरिक, सांसारिक" होने का अर्थ "पुराने स्वभाव का होना" नहीं है। मसीहियों का शारीरिक स्वभाव एक मसीही में सबसे अधिक इस बात को स्पष्टता से दर्शाता है कि (अभी तक) उसकी आत्मिक उन्नत्ति नहीं हुई है (1कुरिन्थियों 3:1,3) या वह पवित्र आत्मा से भरा हुआ नहीं है (इफिसियों 5:18)।

एक मसीही का नये मनुष्यत्व के स्वभाव को उसकी "बुद्धि" (Greek: nous) **भी कहा जाता है (रोमियों 7:23)।** यह उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में संदर्भित करता है, जिसके पास यीशु मसीह जैसा मन या सोचने का तरीका हो (1 कुरिन्थियों 2:16)। पवित्र आत्मा उसके अन्दर रहता है और उसके पाप के स्वभाव के विरोध में रहता है (गलातियों 5:17)। मसीही का नये मनुष्यत्व का स्वभाव यीशु मसीह में उसकी धार्मिक और पवित्र स्थिति को दर्शाता है (तुलना करें रोमियों 5:18 से; रोमियों 6:4-8; 1 कुरिन्थियों 1:30)। यह उसके अन्दर रहने वाले पवित्र आत्मा की वास्तविकता है (भजन. 51:10-11; यूहन्ना 14:16-18)।

---

[1]हो सकता है कि वह स्वयं को अन्य "देवताओं" (बुरी शक्ति) के अधीन रखता हो, लेकिन निश्चित रूप से बाइबल के परमेश्वर के अधीन नहीं, क्योंकि बाइबल का परमेश्वर सभी लोगों से नये मनुष्यत्व (यूहन्ना 3:3-8) और मन फिराव की अपेक्षा करता है (मरकुस 1:15)!

(3)**सभी मसीही "आत्मिक" बन सकते हैं**

और अन्त में पूरी तरह से महिमान्वित पवित्र जन बन जाएँगे।

आत्मिक व्यक्ति। "आत्मिक व्यक्ति" अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करता है और भली और बुरी बातों के बीच अन्तर करने और जाँचने में सक्षम है (1कुरिन्थियों 2:15)। मसीहियों का आत्मिक स्वभाव इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उनकी आत्मिक रूप से उन्नति हो चुकी है (इब्रानियों 5:14) और वे आत्मा से भरे जा चुके हैं (इफिसियों 5:19-21)।

पापी और महिमान्वित पवित्र व्यक्ति। नये मनुष्यत्व और अनन्त महिमान्वित समय के बीच, प्रत्येक मसीही अपने पाप के स्वभाव और अपने नये मनुष्यत्व के स्वभाव के बीच निरन्तर एक युद्ध का अनुभव करता है। इस जीवन में, <u>एक मसीही एक चलने वाला युद्ध</u> है (तुलना करें गलातियों 5:16-18 से)! यह तथ्य कि एक मसीही अपने पाप और नये मनुष्यत्व के स्वभाव के बीच इस विरोध का अनुभव करता है, इस बात को दर्शाता है कि उसका "नया जन्म" हुआ है। शारीरिक मनुष्य इस विरोध का अनुभव नहीं करते।

- नये मनुष्यत्व से पहले एक मनुष्य केवल "पापी" होता है (रोमियों 5:8)।
- नये जन्म के बाद एक मसीही "एक पापी और एक पवित्र जन" दोनों है (रोमियों अध्याय 7)।
- परन्तु भविष्य में, मसीह के दूसरे आगमन के समय एक मसीही "महिमान्वित पवित्र जन" बन जाएगा (रोमियों 8:30; 1 यूहन्ना 3:1-3)!

7:14

<u>प्रश्न 3.</u> <u>"पाप के दास होने" और "पाप को बेचे जाने" में क्या अन्तर है</u>?

ध्यान दें।

(1) **एक गैर-मसीही पुराने मनुष्यत्व की दशा में**

"पाप का दास" है (रोमियों 6:6,16-17,19)।

रोमियों 6:6,16,17 और 19 पद बताते हैं कि अपने नये मनुष्यत्व से पहले, सभी लोग पाप के दास थे। उन्होंने स्वयं को अनाज्ञाकारिता (past tense) का दास होने के लिए दे दिया। वे ऐसे लोगों के समान व्यवहार करते हैं, जिन्होंने स्वेच्छा से स्वयं को पाप के हाथों बेच दिया, जो उनके पाप के स्वभाव में वास करता है (तुलना करें 1 राजाओं 21:20 से; 2 राजाओं 17:17)। यह इस तथ्य से सिद्ध होता है कि अपने पुराने मनुष्यत्व की अवस्था में वे अपने पाप के स्वभाव की इच्छाओं को पूरा करते हैं और अपने शरीर के अंगों को अशुद्धता और बढ़ती दुष्टता (अधर्म) की सेवा करने के लिए दे देते हैं। क्योंकि वे अपने पुराने मनुष्यत्व के स्वभाव के हैं, वे स्वतन्त्र नहीं हैं और न ही वे स्वयं को अपने पाप के स्वभाव की प्रबल शक्ति से स्वतन्त्र कर सकते हैं। वे स्वयं को बाइबल और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अधीन नहीं करते। वे बाइबल के परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (रोमियों 8:7-8)। इस प्रकार, "पाप का दास होने" का अर्थ है "अभी भी पुराने मनुष्यत्व" को धारण किए रहना!

(2)**एक मसीही नया जन्म पाते हुए भी**

"पाप के हाथों बिका हुआ है" (रोमियों 7:14)।

"पाप का दास होने" की दशा वापस कभी नहीं लौटती। जब कोई व्यक्ति नये मनुष्यत्व का मसीही बन जाता है, तो वह *हमेशा* के लिए "पाप के स्वभाव का दास" होने की दशा से स्वतन्त्र हो जाता है और *हमेशा* के लिए परमेश्वर का दास बन जाता है (aorist tense, रोमियों 6:18,22)! "पाप का दास होने" (रोमियों 6:6,16,17,19) की दशा वापस कभी नहीं लौटती!

"पाप के हाथों बेचे जाने" की दशा पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान एक मसीही का अनुभव बनी रहती है। रोमियों 7:14 में पाया जाने वाला इब्रानी भाषा का यह भाग "पाप के हाथ बेचा जाना" (Greek: pepramenos upo tén hamartian) (perfect passive of pipraskó) और "पाप का दास नहीं होना (अनाज्ञाकारिता, अशुद्धता, दुष्टता) (Greek: doulos té hamartia/ eis hupakoé/ té akatharsia/ té anomia) (रोमियों 6:6,16,17,19।, इस प्रकार की स्थिति को नये मनुष्यत्व के मसीहियों की दशा कैसे कहा जा सकता है? रोमियों 7:14-26 की व्याख्या इसके समानांतर गद्यांश रोमियों 5:15-26 में बेहतर तरीके से की गई है।

गलातियों 5:16-17 पद (मसीहियों से) कहता है, "आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा (Greek: epithumia sarx) किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।"

मसीही अभी भी "अपने पाप के स्वभाव की लालसाओं" (शारीरिक) का *अनुभव* करते हैं, लेकिन अब वे इन लालसाओं के *अधीन नहीं हैं* और उन्हें इन लालसाओं में *लिप्त नहीं होना चाहिए।* हालाँकि, जब वे पवित्र आत्मा के अधीन अपने जीवन को व्यतीत नहीं करते, तब वे इन पाप की लालसाओं में लिप्त हो जाते हैं। फिर वे ऐसे कार्य करेंगे जो उन्हें एक मसीही होने के नाते नहीं करने चाहिए।

बाइबल सिखाती है कि नया जन्म लेने वाला विश्वासी *अभी तक सिद्ध नहीं है। समय के साथ* विश्वासी में विरोध उत्पन्न होता है। वह अभी भी अपने वर्तमान निर्बल शरीर में रहता है, जो पाप के स्वभाव के अधीन है। और यह पाप का स्वभाव उस पर लगातार और इतनी गंभीरता से प्रहार करता है कि मसीही हमेशा वह कार्य नहीं कर पाता जो वह वास्तव में वह करना चाहता है।

फिर भी, एक मसीही के पास ऐसा कुछ है, जो गैर-मसीही के पास नहीं होता, अर्थात्, पवित्र आत्मा मसीही में वास करता है! मसीही को उसके "पाप के स्वभाव के हाथों बेच दिया गया है" और कभी-कभी वह मृत्यु का फल उत्पन्न करता है (तुलना करें गलातियों 5:19-21 से; रोमियों 7:5), लेकिन वह "अब अपने पाप के स्वभाव का दास नहीं है"। अपने पाप के स्वभाव का दास केवल अपने पाप के स्वभाव को "हाँ" कह सकता है और केवल पाप ही कर सकता है, लेकिन एक मसीही पाप को "न" कह सकता है! एक मसीही जन पवित्र आत्मा का दास बन गया है और आमतौर पर परमेश्वर के लिए फल (आत्मा का फल) उत्पन्न करता है (गलातियों 5:22-25; रोमियों 7:4)।

यद्यपि उसका पाप का स्वभाव अभी भी एक शक्तिशाली वास्तविकता है (रोमियों 7:14-26), फिर भी एक मसीही ने अपने पाप के (शारीरिक) स्वभाव को उसके फल (पाप की लालसाओं और अभिलाषाओं) समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है (गलातियों 5:24)। एक मसीही ने अपने पाप के स्वभाव में जीवन व्यतीत करना छोड़ दिया है। वह अपने नये मनुष्यत्व के स्वभाव के साथ *अपने जीवन को व्यतीत करने की इच्छा रखता है,* वह ऐसा कर भी सकता है और करेगा भी। या इसे दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए, तो वह स्वयं को पवित्र आत्मा और मसीह के अधीन स्वेच्छा से सौंप देता है जो उसके नये जीवन के भीतर वास करता है। एक मसीही पृथ्वी पर पहले से ही उस सिद्धान्त की प्रक्रिया में है जिसमें उसे होना चाहिए : अर्थात् एक पवित्र जन। या इसे दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए, तो पवित्र आत्मा निरन्तर एक मसीही के जीवन में यीशु मसीह की धार्मिकता और पवित्रता को भरता रहता है (जिसे यीशु मसीह ने उसके लिए अर्जित किया था) (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 1:30)।

एक मसीही "पाप के हाथों बिका (Greek: pipraskó) (perfect tense, passive) हुआ" (रोमियों 7:14) या "पाप के स्वभाव के युद्ध का एक क़ैदी है" (Greek: aichmalótizó) (present continuous tense) (पाप की व्यवस्था जो उसके शरीर के अंगों के भीतर काम करती है) (रोमियों 7:23)। इस प्रकार एक मसीही न चाहते हुए भी युद्ध

का एक कैदी या एक शक्ति का बन्धक है जो *अपनी इच्छा* के लिए पराया मनुष्य है और जिससे वह स्वयं को स्वतन्त्र नहीं कर सकता है। वह इस बात को स्वीकार करता है कि उसका पाप का स्वभाव अभी भी एक वास्तविकता है जो उस पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालता है। वह अनजाने में अपने पाप के स्वभाव के प्रभावशाली संचालन के अधीन है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि वह बार–बार उन कार्यों को करता है, जो वह नहीं करना चाहता (रोमियों 7:15) और सभी भले कार्यों को नहीं कर पाता (रोमियों 7:18)। जैसा कि गलातियों 5:17 में पाया जाता है, वह एक सामर्थी आत्मिक और शारीरिक विरोध (युद्ध, लड़ाई) का अनुभव करता है जो उसके वर्तमान शरीर के अंगों में व्याप्त है, जिसमें पाप का स्वभाव पवित्र आत्मा, जो उसमें वास करता है, के विरोध में लालसा करता है (रोमियों 7:23)।

हालाँकि, गलातियों 5:22–25 के समान रोमियों 8:12–14 में सिखाया गया हैं कि पवित्र आत्मा के द्वारा, जो एक मसीही में वास करता है, उसे अपने पाप के स्वभाव के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करने की आवश्यकता नहीं है और वह पवित्र आत्मा के द्वारा अपने पाप के स्वभाव के कार्यों को क्रूस पर चढ़ा सकता है। अपने भीतर रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा, एक मसीही *बार–बार* अपने पाप के स्वभाव का विरोध कर सकता है और वह कार्य कर सकता है जो वह वास्तव में करना चाहता है, अर्थात् परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना।

लेकिन क्योंकि मसीही में भी पाप का स्वभाव होता है और वह हमेशा पवित्र आत्मा पर निर्भर नहीं रह सकता, इसीलिए वह अक्सर अपने पाप के स्वभाव के बुरे प्रभाव का विरोध नहीं कर पाता और जो वह करना चाहता है वह नहीं करता या नहीं कर सकता। हालाँकि, मसीही जन आत्मिक और नैतिक रूप से नया जन्म लेता है और पवित्र आत्मा के अधीन रहता है, लेकिन फिर भी वह अपने पाप के स्वभाव से बहुत प्रभावित होता है और पवित्र आत्मा की आज्ञाओं का पालन नहीं करता। जब तक मसीही अपने पाप के स्वभाव के साथ अपनी वर्तमान शारीरिक देह में रहता है, तब तक उसका पाप का स्वभाव उस पर प्रहार करता रहेगा और उसमें पवित्र आत्मा का शासन पूर्ण या सिद्ध नहीं होगा। यह केवल मसीह के दूसरे आगमन पर ही होगा (1 यूहन्ना 3:1–3)।

7:24

प्रश्न 4. **"पाप की देह" और "मृत्यु की देह" में क्या अन्तर है?**

ध्यान दें।

प्रेरित पौलुस शरीर से जुड़े चार शब्दों का उपयोग करता है : हालाँकि इन चार शब्दों के बीच एक सम्बन्ध और मतभेद दोनों हैं।

(1)**रोमियों 6:6 में पाप की देह।**

"पाप की देह" (Greek: to sóma tés hamartias) पुराने मनुष्यत्व की शरीरिक देह है। यह गैर–मसीही की शारीरिक देह है, जिसमें उसका पाप या दुष्टता का स्वभाव वास करता, उसकी दशा को परिवर्तित और नियन्त्रित करता, और उस पर प्रभुता करता है, और स्वेच्छा से, अशुद्धता और निरंतर बढ़ती दुष्टता के दास के रूप में उस पर प्रबलता से कार्य करती है। जब कोई व्यक्ति मसीही बन जाता है, तो वह इस "पाप की देह" से स्वतन्त्र हो जाता है (रोमियों 6:6,18,22)। फिर भी, उसकी शारीरिक देह "मुत्यु की देह" और "दीन–हीन देह" बनी रहती है।

(2)**रोमियों 7:24 में मृत्यु की देह।**

"मृत्यु की देह" (Greek: to sóma tou thanatou) नये मनुष्यत्व के मसीही की शारीरिक देह है। यह मसीही की शारीरिक देह है, जो अभी भी पाप के स्वभाव से भरी हुई है, लेकिन अब पवित्र आत्मा के द्वारा नये मनुष्यत्व

के स्वभाव से भी भरी हुई है। यह मसीही की शारीरिक देह है, जिसके द्वारा वह बार-बार पाप करता रहता है, क्योंकि मसीही उस समय पवित्र आत्मा पर पूर्ण निर्भर नहीं रहता है। इसके परिणामस्वरूप, पाप या दुष्टता का स्वभाव (पाप की व्यवस्था) (रोमियों 7:21,23), जो मसीही में वास करता है, आत्मिक और विशेष रूप से शारीरिक मुत्यु का फल उत्पन्न करता है। इसीलिए एक मसीही की देह को "मुत्यु की देह" कहा जाता है।

(3)**फिलिप्पियों 3:21 में दीन-हीन देह।**

"दीन-हीन देह" (Greek: to sóma tés tapeinóseós) एक मसीही की मरे हुए लोगों में से पुनरुत्थान के पहले की शारीरिक देह है। यह मसीही की शारीरिक देह है, जो अभी भी शारीरिक मृत्यु के अधीन है। यह "मृत्यु की देह" के समान है जो अन्ततः मर जाती है। अन्तिम बैरी जिसे मसीह नाश करेगा वह शारीरिक मृत्यु है (1 कुरिन्थियों 15:26)।

(4)**फिलिप्पियों 3:21 में महिमा की देह ।**

"महिमा की देह" (Greek: to sóma tés doxés) एक मसीही की मरे हुए लोगों में से पुनरुत्थान के बाद की शारीरिक देह है। केवल अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह "दीन-हीन देह" को "महिमा की देह" में बदलने के लिए अपनी सारी सामर्थ्य का उपयोग करेगा, जो यीशु मसीह की महिमान्वित पुनर्जीवित शारीरिक देह के समान होगी! महिमा की देह अविनाशी, महिमान्वित, सामर्थी और आत्मिक होगी (1 कुरिन्थियों 15:42-44,54)।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवतः अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं ?

साझा करें व लिखें। आइये हम आपस में सोच-विचार करके रोमियों 7:14-25 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें ?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें। (याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगे। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. **रोमियों 7:14-25 में लिखे हुए संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।**

7:14. परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं सहित) का अध्ययन करें, क्योंकि यह आज्ञाओं के रूप में परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाती है। यह आत्मिक है, अर्थात् यह पवित्र, धर्मी और भली है।

7:15,23. जब आप अपने पाप के स्वभाव और अपने नए मनुष्यत्व के स्वभाव के बीच निरन्तर आत्मिक और शारीरिक युद्ध का अनुभव करते हैं तो निराश न हों। यह एक प्रमाण है कि आपका नया जन्म हुआ है।

7:18. महसूस करें कि आपके पाप के स्वभाव में एक भी अच्छी बात नहीं है। इसलिए कभी भी अपने पाप के स्वभाव के साथ प्रयोग न करें।

7:24. पूरी तरह से आश्वस्त रहें कि आपके शरीर में वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा केवल यीशु मसीह ही आपके पाप के स्वभाव की प्रभुता से आपको *बार-बार* बचा सकते हैं।

2. **रोमियों 7:14-25 के व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।**

मैं मानता हूँ कि मेरे पाप के स्वभाव का प्रभावशाली संचालन मुझे वह करने के लिए विवश करता है जो मैं नहीं करना चाहता। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मैं अभी भी अपरिपक्व, निर्बल या शारीरिक हूँ। फिर भी, मैं अपने द्वारा किए गए पाप की पूर्ण ज़िम्मेदारी लेता हूँ (तुलना करें 1 यूहन्ना 1:8,10)। मुझे इस बात का एहसास है कि मेरे पाप का स्वभाव मेरी अपनी सामर्थ्य और परमेश्वर की व्यवस्था की सामर्थ्य से परे है जो मुझे पाप करने से स्वतन्त्र नहीं कर सकता। इस प्रकार, मैं मानता हूँ कि मेरे पाप का स्वभाव पूरी तरह से दुष्टता से भरा हुआ है और मैं अपने पापों का अंगीकार (1 यूहन्ना 1:9) और पश्चाताप करना जारी रखूँगा।

मैं मानता हूँ कि अपने आप में, मैं अक्सर अपने पाप के स्वभाव का विरोध या पूर्ण रूप से उसका नाश करने में असहाय महसूस करता हूँ। इसलिए, पौलुस के समान, मैं अपने पाप के स्वभाव की प्रभावशाली शक्ति के प्रभाव से छुटकारा पाने के लिए स्वयं के बाहर उद्धारकर्ता की तलाश में हूँ! मेरा न्याय करने और पापों से स्वतन्त्र करने के लिए मुझे यीशु मसीह द्वारा अर्जित की गई धार्मिकता की आवश्यकता है। पवित्र होने के लिए भी मुझे यीशु मसीह की आवश्यकता है! केवल यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह ही निश्चित रूप से मुझे वर्तमान समय में मेरे पाप के स्वभाव के पूर्ण प्रभाव की सामर्थ्य से स्वतन्त्र करेगा।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये रोमियों 7:14-25 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।

(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पंक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(मध्यस्थता)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण।** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों और राज्य का प्रचार करें।
2. रोमियों 7:14-25 पर एक दूसरे के साथ मिलकर या लोगों के समूह में **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें**।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। भजन नीतिवचन 1,3,4 और 5** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें।

   पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएँ।
4. **याद करें। (5) परमेश्वर सर्व-शक्तिमान है : इफिसियों 1:11-12।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. **<u>बाइबल अध्ययन</u>**। लूका अध्याय 11:5-13 में लिखे हुए "मध्स्थता करने वाले मित्र" और लूका 18:1-8 में "निरन्तर आग्रह करने वाली विधवा" के दृष्टान्तों की तैयारी करें।
   दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिए छः कदमों का पालन करें
6. **<u>प्रार्थना</u>**। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के सम्बन्ध में **<u>अपने लेखे का अद्यतनीकरण करें</u>**। अपने नोट्स में शान्त समय, याद करने वाले, बाइबल अध्ययन और इस तैयारी की सामग्री के नोट्स को शामिल करें।